2020 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए अ०दि०-पत्र

पुस्तक का नाम- निर्मला (उपन्यास)

लेखक - मुंशी प्रेमचन्द

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न:- उपन्यासकार के रूप में प्रेमचन्द जी की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर:- उर्दू साहित्य के उपन्यासकार नवाबराय जब हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द के नाम से अवतीर्ण हुए तो उपन्यास क्षेत्र में क्रान्ति सी आ गई। हिन्दी उपन्यास परम्परा में उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द एक ऐसे बिन्दु हैं जिनके दोनों ओर उपन्यास साहित्य की भिन्न-भिन्न रेखाएँ स्पष्ट परिलक्षित होती है। मुंशी प्रेमचन्द से पूर्व हिन्दी उपन्यास को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं- ① सामाजिक उपन्यास ② ऐतिहासिक उपन्यास ③ तिलस्मी, जासूसी तथा अद्भुत घटना प्रधान उपन्यास।

इन सभी सामाजिक उपन्यासों में धर्म की जय, आदर्श आचरण का महत्व, अंधविश्वासों का त्याग, सतीत्व की महिमा, ईश्वरीय न्याय में विश्वास तथा राष्ट्रीय प्रेम आदि का चित्रण था। पूर्व प्रेमचन्द युग के ऐतिहासिक उपन्यास सच्चे अर्थों में ऐतिहासिक उपन्यास नहीं थे। इन उपन्यासों के लेखक इतिहास से हटकर प्रणय कथाओं, हास्यपूर्ण प्रसंगों और कुतूहलवर्द्धक घटनाओं को लिखने में लग गये। इन उपन्यासों का उद्देश्य पाठक का मनोरंजन मात्र था। इतिहास तो केवल दिखावा था।

घटना प्रधान उपन्यासों में तिलस्मी-ऐयारी, जासूसी और अद्भुत घटना प्रधान उपन्यास आते हैं। 'तिलस्म' शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ 'इन्द्रजाल' है। तिलस्म बाँधने में बड़े-बड़े तांत्रिकों और ऋषियों की सहायता ली जाती थी। ऐयारी तिलस्म तोड़ने में कुशल व्यक्तित्व कहा जाता है। इन तिलस्मी ऐयारी उपन्यासों के प्रवर्त्तक श्री देवकीनन्दन खत्रीजी। इन्होंने 1888 ई० में चन्द्रकान्ता उपन्यास लिखा था।

शेष आगे-

कहते हैं कि वह अपनी विरह में पागल हो गई है।
वह अपने चितचोर अर्थात अपने प्राण-प्रिय को स्वप्न में
देखती है। यह स्वप्न विरहिणी को सुखद लगता है, परन्तु
जैसे ही वह उससे मिलने के लिए उठती है तो अचानक
उसकी आँखें खुल जाती हैं। इसके पश्चात् उसका स्वप्न
टूट जाता है। स्वप्न की इसी भूल-भूलैया में वह अपने
प्रियतम का दर्शन करने से वंचित रह जाती है। संसार
के लोग सोकर समय बिताते हैं, किन्तु वह जागकर ही
समय बिताती है।

4. प्रश्न:- 'पथिक-प्रिया' पाथ क्यों बनना चाहती है?

उत्तर:- विरहिणी 'पथिक-प्रिया' पति-वियोग की पीड़ा में
तड़प रही है। वह अपने चितचोर के वियोग में विक्षि
सी हो गई है। विक्षिप्तावस्था में वह कहती है कि
मैं यदि पाथ होती तो मेरे नाथ इस पर पैर र
कर चलते। उनके चलने से मुझे पूर्ण आनन्द की अनु
होती। विरहिणी अपने प्रियतम को अपने जीवन क
आराध्य मानती है। वह अपने प्रियतम के पद की धू
बनना चाहती है। क्योंकि उसके नाथ ही उसकी आत
की शान्ति है और वही उसका जीवन।

डॉ० देव चरण प्रसाद 21/2/2
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० क० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णि

इसके अनुगामी हैं। इस उपन्यास की इतनी अधिक लोकप्रियता हुई कि सैकड़ों युवकों ने इसे पढ़ने के लिए हिन्दी ~~[illegible]~~ सीखी भी। जासूसी उपन्यासकारों में गोपाल राम गहमरी का नाम उल्लेखनीय है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द के पूर्व लिखे गये उपन्यास मौलिक उपन्यास नहीं थे। ऐसे उपन्यासों के पात्र केवल ~~काल्पनिक~~ काल्पनिक थे। इस काल के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता का पूर्ण अभाव था।

प्रेमचन्द युग में हिन्दी उपन्यास सामाजिक जीवन से जुड़ गया। प्रेमचन्द ने घोषणा की कि — मैं समाज का झंडा लेकर चलने वाला व्यक्ति हूँ।

मुंशी प्रेमचन्द ने अपने समस्त उपन्यासों में सामाजिक जीवन का यथार्थ पाठकों के समक्ष रखा जैसे- निर्मला उपन्यास के माध्यम से इन्होंने भारतीय समाज में अनमेल विवाह और दहेज प्रथा के विरुद्ध जहाँ एक ओर शंखनाद किया है तो वहीं दूसरी ओर 'गोदान' जैसे उपन्यास में भारतीय कृषक जीवन का जैसा सच्चा वर्णन किया है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। गबन, प्रेमाश्रम, कायाकल्प आदि उपन्यासों में भी, इन्होंने आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी दृष्टिकोण को ही आत्मसात किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो०- हिन्दी
डा० कु० ह० महावि० कुलहैना, पूर्णियाँ

21/12/20

'पथिक' - काव्य - कवि- श्री रामनरेश त्रिपाठी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

शास्त्री द्वितीय खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र

राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्र:- पथिक-प्रिया कौए से क्या कहती है?

उ:- पथिक-प्रिया अपने पति के वियोग में तड़प रही है। वह अपने प्राण-प्रिये की आगमन की बाट जोह रही है। उसे पूर्ण विश्वास है कि मेरे पति एक न एक दिन मुझसे अवश्य मिलने आयेंगे। इसलिए वह कौए को संबोधित करती हुई कहती है कि हे-काग मेरे मरने पर तुम मेरे समस्त शरीर को खा लेना, परन्तु मेरी आँखों को छोड़ देना। क्योंकि मैं इन्हीं आँखों से अपने प्रियतम का दर्शन करना चाहती हूँ। अब मुझे एक ही आकांक्षा रह गई है कि मैं किसी प्रकार अपने पति का एक बार दर्शन कर अपने जीवन को सार्थक बना सकूँ।

प्र:- विरहिणी पथिक-प्रिया खिड़की से क्या देखती है?

उ:- विरहिणी पथिक-प्रिया अपने प्राणप्रिये के वियोग की ज्वाला में जल रही है। उसे नींद नहीं आती है। वह निरन्तर खिड़की से मार्ग की ओर देखती रहती है। उसे पूर्ण विश्वास है कि मेरे नाथ मुझसे मिलने के लिए अवश्य आयेंगे। इसी आशा और विश्वास से वह खिड़की से मार्ग को निहारती रहती है। उसे यह पूर्ण विश्वास है कि मेरे आराध्य इसी रास्ते से चलकर मेरे पास आने वाले हैं। इसीलिए वह बार-बार खिड़की से मार्ग की ओर देखती है।

प्र:- 'पपीहा' की आवाज सुनकर विरहिणी क्या करती है?

उ:- कवि श्री रामनरेश त्रिपाठी विरहिणी की मार्मिक दशा का सजीव वर्णन करते हुए ~~करती करते~~

शेष आगे -

'पथिक' - काव्य - कवि- श्री रामनरेश त्रिपाठी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

शास्त्री द्वितीय खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र

राष्ट्रभाषा हिन्दी

- पथिक-प्रिया कौए से क्या कहती है?

पथिक-प्रिया अपने पति के वियोग में तड़प रही है। वह अपने प्राण-प्रिये की आगमन की बाट जोह रही है। उसे पूर्ण विश्वास है कि मेरे पति एक न एक दिन मुझसे अवश्य मिलने आयेंगे। इसलि वह कौए को संबोधित करती हुई कहती है कि हे काग मेरे मरने पर तुम मेरे समस्त शरीर को खा लेना, परन्तु मेरी आँखों को छोड़ देना। क्योंकि मैं इन्हीं आँखों से अपने प्रियतम का दर्शन करना चाहती हूँ। अब मुझे एकही आकांक्ष रह गई है कि मैं किसी प्रकार अपने पति का एक बार दर्शन कर अपने जीवन को सार्थक बना सकूँ

- विरहिणी पथिक-प्रिया खिड़की से क्या देखती है?

विरहिणी पथिक-प्रिया अपने प्राणप्रिये के वियो की ज्वाला में जल रही है। उसे नींद नहीं आती है वह निरन्तर खिड़की से मार्ग की ओर देखती रह है। उसे पूर्ण विश्वास है कि मेरे नाथ मुझसे मिल के लिए अवश्य आयेंगे। इसी आशा और विश्वा से वह खिड़की से मार्ग को निहारती रहती है। उसे यह पूर्ण विश्वास है कि मेरे आराध्य इस रास्ते से चलकर मेरे पास आने वाले हैं। इसीलि वह बार-बार खिड़की से मार्ग की ओर देखती है

'पपीहा' की आवाज सुनकर विरहिणी क्या करती है?

कवि श्री रामनरेश त्रिपाठी विरहिणी की मार्मिक दशा का सजीव वर्णन करते हुए ~~करती करते~~

शेष आगे -